P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

हरियाणा के कर्मठ सेवा साधक भक्त फूलसिंह जी का शैक्षिक क्षेत्र में योगदान

मोनिका
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
भगत फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय,
खानपुर, कलाँ,
हरियाणा, भारत

सारांश

भक्त फूल सिंह जी भी एक महान् समाज सुधारक थे, जिनका सामाजिक कार्यों, शिक्षा जगत विशेषकर स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में योगदान अतुलनीय है। इनका सामाजिक कार्यों में योगदान तथा बलिदान के लिए इन्हें 'देहाती गांधी' के नाम से भी जाना जाता है। इनका मानना था कि सुशिक्षित और उत्तम प्रकृति की माताओं से उत्पन्न कन्याओं को उत्तम जीवन निर्माण की शिक्षा प्रदान करने से देश की जटिल समस्याएं समाप्त हो जाएगी।

मुख्य शब्द : शैक्षिक क्षेत्र, भक्त फूलसिंह जी, योगदान।

प्रस्तावना

हरियाणा को पावन धरती ऋषि मुनियों, समाज सुधारकों, शिक्षकों एवम् वीरों की गाथाओं के कारण जानी जाती है। भक्त फूल सिंह जी भी एक महान् समाज सुधारक थे, जिनका सामाजिक कार्यों, शिक्षा जगत विशेषकर स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में योगदान अतुलनीय है। इनका सामाजिक कार्यों में योगदान तथा बलिदान के लिए इन्हें 'देहाती गांधी' के नाम से भी जाना जाता है। इनका मानना था कि शिक्षा सभी सामाजिक रोगों की रामबाण दवा है जिससे समाज में फैली हुई अनेक कुरीतियों को खत्म किया जा सकता है। ये उत्तर भारत में महिला शिक्षा के अग्रदूत माने जाते हैं। इनका मानना था कि सुशिक्षित और उत्तम प्रकृति की माताओं से उत्पन्न कन्याओं को उत्तम जीवन निर्माण की शिक्षा प्रदान करने से देश की जटिल समस्याएं समाप्त हो जाएगी।

प्रस्तुत पेपर में उनके शिक्षा क्षेत्र में विचारों का अध्ययन किया गया है। उनकी शिक्षा एवम् शिक्षा के लिए विचार आज भी अनुकरणीय हैं।

साहित्यावलोकन

1. मलिक एस. (2006) ने बताया है कि पटवारी पद पर आने पर अनेक बुराईयों ने इनको घेर लिया था किन्तु स्वामी ब्रह्मानन्द एवम् स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रभाव में आने पर इन्होनें बुराईयां त्याग कर समाज व राष्ट्र के लिए अपना सारा जीवन न्यौछावर कर दिया।
2. शकुन्तला व ज्ञानवती (1992) का अभिनन्दन–ग्रन्थ में उद्देश्य था कि कैसे भक्त जी ने तथा बाद में उनके सानिध्य तथा आशीर्वाद से उनके मार्गदर्शन में राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत उनकी बेटी सुभाषिणी देवी ने शिक्षा परम्परा को बढ़ाकर नारी जाति को सशक्त कर समाज को प्रगतिशील बनाने में अपना योगदान दिया।
3. विद्यामार्तण्ड वि. (2006) का उद्धेश्य था कि कैसे नेक भावना से ओत–प्रोत सामाजिक विकास एवम् शिक्षा जगत में शिक्षा के उत्थान के लिए कार्य किये।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भक्त फूल सिंह के सामाजिक बलिदान का विश्लेषण,
2. भक्त फूल सिंह के शैक्षिक विचारों का विश्लेषण,
3. भक्त फूल सिंह के स्त्री शिक्षा के लिए विचारों का विश्लेषण

शोध प्रणाली

प्रस्तुत पेपर में द्वितीयक स्त्रोतों का प्रयोग हुआ है। भक्त जी के जीवन परिचय के साथ–साथ उनके शैक्षिक जगत में किये गये कार्यों एवम् उनके शिक्षा के लिए विचारों का अध्ययन संक्षेप में किया जायेगा।

विवरण

जन्म एवम् पारिवारिक पृष्ठभूमि

भक्त फूल सिंह का जन्म 24 फरवरी 1885 ई. में हरियाणा के जिला सोनीपत में पड़ने वाले गांव माहरा में हुआ था। इनके पिता जी का नाम श्री बाबर एवम् माता का नाम श्रीमति तारा देवी था। बचपन में इनका नाम 'हरफूल'

था। ये 8 वर्ष की आयु में स्कूल गये। आठवीं कक्षा इन्होनें खरखौदा से उत्तीर्ण की जहां से इनका नाम हरफूल से फूल सिंह हो गया। फिर इन्होनें पटवारी की परीक्षा अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण की। सन् 1904 में इन्होनें पटवारी पद को ग्रहण किया। सन् 1905 में इनका विवाह लक्ष्मी देवी से कर दिया गया। सन् 1914 में ये एक पुत्री के पिता बने जिसका नाम सुभाषिणी रखा गया। किन्तु पुत्री के जन्म के ढाई वर्ष बाद ही इनकी पत्नी की असामयिक मृत्यु हो गयी। सन् 1917 में फूल सिंह जी के भाई मनसाराम की भी असामयिक मौत हो गयी। इनके भाई की मौत के बाद इनका पुनर्विवाह इनके भाई की पत्नी धूपकौर के साथ कर दिया जिनसे सन् 1918 में इनका एक और पुत्री गुणवती प्राप्त हुई। सामाजिक एवम् शिक्षा जगत में कार्य करते हुए सन् 1942 में अनजान लोगों ने इन्हें अपनी गोली से शहीद कर दिया।

पटवारी की नियुक्ति एवम् जीवन परिवर्तन

छोटी आयु में ही पटवारी की नियुक्ति होने पर इनमें कई नकारात्मक कमियां आ गयी थी। जैसे उरलाना में मुसलमानों की संगत के कारण मांसाहार करना आरम्भ कर दिया, रिश्वतखोरी की आदत पड़ने लगी थी। मगर जल्दी ही आर्य समाज के सम्पर्क ने उनके जीवन को परिवर्तित कर दिया। उन्होनें सभी बुराईयों जैसे मांस, मदिरा का सेवन व रिश्वत लेना बंद कर दिया। जिनसे रिश्वत ली थी उनका पैसा उनको वापिस कर दिया।

प्रीतम सिंह के साथ संग करने पर इन पर आर्य समाज का असर पड़ने लगा। फिर श्रद्धानन्द जी के उपदेश सुनने पर तो इनके तन बदन में सर्वस्व आर्य समाज के प्रचार व प्रसार हेतु सामाजिक कार्य करने का निश्चय किया। तदोपरान्त ब्रह्मानन्द स्वामी ने पानीपत में सभी विधि विधान के साथ इनकी समाज के लिए पुनीत भावना को जानकर इनको आर्य समाज का नियमित सदस्य बनाया।

आर्य समाज अपनाने पर इन्होनें कभी भी व्यवस्थाओं एवम् परिस्थितियों के आगे हार नहीं मानी। उन्होनें समाज का विकास शिक्षा विशेषकर नारी शिक्षा के प्रचार–प्रसार व वैदिक पद्धति के द्वारा किया। इनका पूरा जीवन प्रेरणात्मक है। सभी भारतवासियों के लिए इन्होनें उस समय शिक्षा एवम् समाज की स्थिति में सुधार किये जब शिक्षा गरीबों, मध्यवर्ग, अछूतों व महिलाओं से बहुत दूर थी। इनके शिक्षा के क्षेत्र में विचार एवम् प्रयत्न आज भी अनुकरणी हैं। आर्य समाज के सम्पर्क एवम् सेवा की धुन के कारण सन् 1918 में नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

शिक्षा के लिए विचार

सन् 1918 में पटवार पद की नौकरी से त्याग पत्र देने के बाद अपने प्रिय व घनिष्ठ सहयोगी भाई कुडेराम को रोग ग्रस्त पाया, अनेक प्रयत्न करने पर भी वह रोगमुक्त नहीं हो पाये। यहीं से भक्त जी ने पाखण्ड, अशिक्षा, अधार्मिकता और राजनीतिक अनभिज्ञता से समाज को शिक्षा द्वारा मुक्त कराने का निश्चय किया। गम्भीर चिन्तन मनन के बाद उन्होनें पाया कि 'शिक्षा सभी सामाजिक रोगों की रामबाण दवा है।' ये मानते थे कि शिक्षा प्रदान करने के महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य नवयुवक विद्यालय खोला जाए। इसके साथ ही ये मानते थे कि ऐसे विद्यालयों में शिक्षा देने के लिए पहले स्वयं का चरित्र निर्माण उच्च कोटि का होना आवश्यक है। वे मुफ्त शिक्षा के पक्षधर थे।

विद्यार्थियों के लिए विचार

विद्यार्थियों के लिए सादा जीवन और उच्च विचार के पक्षधर थे। इनका मानना था कि अनुशासन में रहकर विद्यार्थी सही मायने में शिक्षा ग्रहण करते हैं। अनुशासन तथा कठोर परिश्रम शिक्षा ग्रहण करने की मौलिक आवश्यकता है। इन्होनें अनुशासन व कठोर परिश्रम का पाठ बहुत प्रेम एवम् अपनेपन से विद्यार्थियों को सिखाया। ये गुरूकुल के आचार्यों के अपनेपन व समर्पण का भाव ही था कि यहां से (गुरूकुल) स्नातक विद्यार्थियों ने शिक्षा उपरान्त गुरूकुल एवम् शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए कठिन से कठिन समय में शिक्षा एवम् विद्यार्थियों के लिए बिना पारिश्रमिक भी लम्बे समय तक कार्य किया।

शिक्षकों के लिए विचार

भक्त जी यह बात भली भांति जानते थे कि किसी भी शैक्षिक संस्था को चलाने के लिए शिक्षकों/आचार्यों का आदर्श, कुशलता, ईमानदारी व एकनिष्ठा तथा सम्मान बहुत जरूरी है। विषय ज्ञान के साथ–साथ एक–दूसरे के साथ चर्चा भी अति अनिवार्य है। सम्भवतः गांव में जंगल जैसे माहौल में कुछ विद्वान जब ज्यादा दिन तक नहीं रह पाए तो ये चिन्तित हुए। इस चिन्तन की अवस्था के साथ वे श्रद्धानन्द जी के पास बैठ गये व अच्छे योग्य शिक्षक की मांग की। श्रद्धानन्द जी ने भी विचार विमर्श करके स्वामी युधिष्ठिर जी को भक्त फूल सिंह जी के साथ जाकर पूर्ण कर्त्तव्य निष्ठा से शिक्षा कार्य सम्भालने का आदेश दिया।

भक्त जी विद्वानों व समाज सेवकों से प्रेम व आदर करते थे। उनकी धारणा थी कि विद्वान व समाज सेवक ही मानव जीवन और भारतीय समाज के वास्तविक निर्माता हैं। इसी विचार के साथ आचार्य युधिष्ठिर जी को कहा कि 'ब्रह्मचारी जी मैंने आपको गुरूकुल और विद्यार्थी सौंप दिये हैं। आप उत्तम श्रेणी के स्नातक पैदा करो।' इस वक्तव्य से कहा जा सकता है कि वह योग्य शिक्षकों के लिए पूर्ण आदर, विश्वास का भाव रखते थे। उनका ये भी मानना था कि 'उद्देश्य की पूर्ति के मार्ग पर चलने से पहले स्वयं का निर्माण' आवश्यक है।

शिक्षा पद्धतियां

ये भारतीय संस्कृति को ऋषि मुनियों कृत भारतीय ग्रन्थों के अध्ययन–अध्यापन के द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षित करना चाहते थे। शिक्षा प्रणाली में Teaching Learning Process अंग्रेजी की बजाय शिक्षण का माध्यम संस्कृत भाषा को महत्त्व देते थे। इनका मानना था कि संस्कृत भाषा के अभ्यास के साथ वैदिक साहित्य द्वारा पठन–पाठन ज्यादा प्रभावशाली होता है। ये धार्मिक ग्रन्थों जैसे मनुस्मृति, महाभारत, रामायण, गीता एवम् शुक्रनीति के अध्ययन के पक्षधर थे। उनका मानना था कि देश को विविध प्रकार के वृत्ति व प्रवृत्ति वाले लोगों की आवश्यकता होती है, जो विभिन्न प्रकार की वृत्तियों वाली कन्याओं को पृथक–पृथक शिक्षणालयों में दी जा सकती है। इससे कहा जा सकता है कि वे मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कन्याओं

की शिक्षा के पक्षधर थे। कन्या शिक्षा के लिए गोपालन को मौलिक शिक्षा की मुख्य आवश्यकता समझते थे। अतः कहा जा सकता है कि मनोवैज्ञानिक विचारों के साथ–साथ क्रियात्मक शिक्षा का सामंजस्य भी अहम स्थान है।

नारी शिक्षा के लिए विचार

भक्त फूल सिंह जी के मन में स्त्री जाति के लिए अगाध आदर था। एक उत्कृष्ट समाज के लिए 'स्त्री वर्ग का शिक्षित होना अनिवार्य' मानते थे। इनका मानना था कि जब तक बालिकाएं और स्त्रियां शिक्षित नहीं होंगी तब तक समाज का कल्याण नहीं हो सकता। इन्होनें इस 'पुनीत उद्देश्य हेतु बैठक बुलाई कि वह कन्याओं की शिक्षा हेतु पाठशाला खोलना चाहते हैं लेकिन धनाभाव के कारण समस्त सदस्यों द्वारा विरोध किया गया। किन्तु भक्त जी ने अपने दृढ़ विश्वास के साथ कहा कि वह दिन जल्दी ही आएगा जब आप सबको मेरी बात उचित व उपयोगी लगेगी। आज भक्त फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय की उपस्थिति उनकी दूरदर्शिता का परिणाम है जिसका नाम भी लेते हुए हरेक कन्या सम्मान महसूस करती है।

उनका मानना था कि यदि कन्याओं को 'उत्तम जीवन निर्माण की शिक्षा दी जाए तो अनेक प्रकार की जटिल समस्याएं स्वतः शान्त हो जायें। अतः कन्याओं को उनकी वृत्तियों के आधार पर शिक्षा देनी चाहिए। इस तरह ये कन्याओं के लिए मनोवैज्ञानिक दृष्टि से शिक्षण के पक्षधर थे।

भक्त फूल सिंह जी : एक कुशल दूरदर्शी प्रशासक के रूप में

भक्त जी में वो सभी गुण थे जो एक प्रशासक में किसी भी संस्थान को चलाने के लिए आवश्यक हैं। विद्वानों का सम्मान, निरन्तर अच्छे विद्वानों की खोज, उनकी समस्याओं को अपनी समस्या मानकर उसे दूर करने की यथासम्भव कोशिश करते थे। धनाभाव के बावजूद नेक कार्य की पूर्ति के लिए सत्याग्रह का हथियार इस्तेमाल किया। पहले 1920 में भैंसवाल गुरूकुल फिर 1936 में कन्या पाठशाला का संचालन, उनकी समाज कल्याण की नेक भावना, दूरदृष्टि, कठोर परिश्रम और समय पर उचित योजना के साथ उचित योजना के कारण ही कुशलतापूर्वक सम्भव हो पाया।

निष्कर्ष

भक्त जी एक समाज सुधारक थे जिन्होनें शिक्षा व आर्य समाज का प्रचार एवम् प्रसार के लिए अपना सारा जीवन लगा दिया। उनका जीवन आज की पीढ़ी के लिए अनुकरणीय है। उन्होनें समाज को शिक्षा द्वारा बुराईयों के संक्रमण से मुक्त कराने की कोशिश की। उनकी दूरदर्शिता स्त्री शिक्षा के लिए प्रयत्न, धैर्य, लगन, कठोर अनुशासित जीवन आदि गुणों के कारण वे हरियाणा ही नहीं वरन् पूरे उत्तर भारत में जाने जाते हैं। सम्पूर्ण समाज विशेषकर स्त्री जाति सदा उनके कार्यों के लिए ऋणी रहेगी क्योंकि भक्त जी ने उस वक्त स्त्री शिक्षा के लिए प्रयत्न किये जब स्त्री शिक्षा के बारे में कोई सोचता भी नहीं था।

जाते–जाते फूल सिंह यह कह गये,
मेरे जो सपने अधूरे रह गए।
ये नसीहत याद रखना बेटी,
गुरूकुल को अपना समझना बेटी।
दुनिया की धारा में न बहकर,
अपने को होम करना बेटी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

विद्यामार्तण्ड, वि. (2006). श्री भक्त फूल सिंह का जीवन चरित्र, आचार्य प्रिंटिंग प्रैस रोहतक, 63–70.

मलिक, एस. (2006). देहाती गांधी भक्त फूल सिंह जीवन वृत्त, शिव लक्ष्मी विद्याधाम, हिसार, 137, 163.

शकुन्तला, एस. ज्ञानवती, एस. (1992). अभिनन्दन ग्रन्थ, वीरेश सम्राट आर्ट ऑफ सैट प्रैस दिल्ली, 53.

कुण्डू धर्मवीर (२०१०), श्री भक्तफूल सिंह चरितम महाकाव्य, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक,

सिंह आर (१६६५), मुक सेवक चौ० माडू सिंह जीवन चरित, नेशनल प्रिंटिंग प्रेस , रोहतक ७७–७६ ,

रानी रविता भक्त मूल सिंह – सामाजिक योगदान व बलिदान इंटरनेशनल जनरल ऑफ रिसर्च, वॉल्यूम–४, नवंबर–४ –२०१७